© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2024

समृद्ध भारत के लिए समृद्ध किसान: कृषि विकास और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव का एक व्यापक अध्ययन

रेणु बाला

शोधार्थी , बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक

lakshitverma0001@gmail-com

प्रो. (डॉ.) सुनीता यादव

बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक

सार

भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति, जिसमें फसलें, भूमि जोत पैटर्न और प्रौद्योगिकी की भूमिका शामिल है, का विश्लेषण इस क्षेत्र की वर्तमान स्थिति का एक स्नैपशॉट पेश करने के लिए किया जाता है। जलवायु परिवर्तन, बाजार मूल्य में उतार–चढ़ाव और ऋण तक पहुंच जैसी चुनौतियों का विस्तार से पता लगाया गया है, जो किसानों की समृद्धि में बाधा डालने वाली बाधाओं को उजागर करती हैं। इसके अलावा, यह शोध पत्र भारतीय अर्थव्यवस्था पर किसानों की भलाई के गहरे प्रभाव पर प्रकाश डालता है। यह कृषि विकास, रोजगार सृजन और ग्रामीण उपभोग के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था की उत्तेजना के बीच एक स्पष्ट संबंध स्थापित करता है। किसानों को समर्थन देने के उद्देश्य से की गई सरकारी पहलों और नीतियों की आलोचनात्मक जांच की जाती है, जिसमें किसानों की आजीविका में सुधार लाने में उनकी प्रभावशीलता पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

मुख्य शब्दः भारतीय, कृषि, वर्तमान, प्रौद्योगिकी, समृद्ध।

प्रस्तावना

कृषि, जिसे अक्सर भारत की रीढ़ कहा जाता है, ने देश की पहचान और आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सदियों पुरानी कृषि पद्धतियों की समृद्ध ऐतिहासिक विरासत के साथ, भारत का कृषि क्षेत्र खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने में सहायक रहा है। इस शोध पत्र का उद्देश्य किसानों की समृद्धि और समग्र रूप से भारत की समृद्धि के बीच गहरे संबंध का पता लगाना है। यह भारतीय कृषि के विभिन्न आयामों, इसके ऐतिहासिक संदर्भ, इसके सामने आने वाली वर्तमान चुनौतियों और वृद्धि एवं विकास के संभावित अवसरों पर प्रकाश डालता है। अपने पूरे इतिहास में, भारत ने परंपरा में गहराई से निहित प्राचीन प्रथाओं से लेकर प्रौद्योगिकी और नवाचार द्वारा संचालित आधुनिक खेती के तरीकों तक कृषि के विकास को देखा है। भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति की सराहना करने के लिए इस ऐतिहासिक प्रगति को समझना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, भारतीय कृषि पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के प्रभाव और उसके बाद स्वतंत्रता के बाद के कृषि सुधारों और नीतियों के दूरगामी परिणाम हुए हैं जो आज भी इस क्षेत्र को आकार दे रहे हैं।

भारतीय कृषि का ऐतिहासिक अवलोकन

प्राचीन कृषि पद्धतियाँ:

भारत में कृषि का पता सिंधु घाटी सभ्यता से लगाया जा सकता है, जो दुनिया की सबसे प्रारंभिक शहरी संस्कृतियों में से एक है, जो लगभग 2500 ईसा पूर्व विकसित हुई थी। इस प्राचीन सभ्यता के निवासी कृषि गतिविधियों, गेहूं, जौ और दालों जैसी फसलों की खेती में लगे हुए थे। पुरातात्विक साक्ष्य सुनियोजित सिंचाई प्रणालियों की उपस्थिति का सुझाव देते

मध्यकालीन कृषि पद्धतियाँ:

जैसे–जैसे भारत विभिन्न राजवंशों और साम्राज्यों से गुजरा, कृषि पद्धतियाँ विकसित होती रहीं। मौर्य साम्राज्य (322–185 ईसा पूर्व) और गुप्त साम्राज्य (320–550 सीई) में उन्नत उपकरणों और तकनीकों के साथ कृषि में प्रगति देखी गई। इस अवधि के दौरान फसल चक्र और जुताई के लिए बैलों का उपयोग आम चलन बन गया। प्राचीन और मध्यकाल में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के प्रसार का कृषि पर गहरा प्रभाव पड़ा। अहिंसा (अहिंसा) इन धर्मों का केंद्रीय सिद्धांत था, जिससे अधिक मानवीय और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा मिला।

औपनिवेशिक शासन के तहत कृषि

यूरोपीय शक्तियों, विशेषकर ब्रिटिशों के आगमन का भारतीय कृषि पर गहरा प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों ने नील, कपास और अफीम जैसी नकदी फसलें शुरू कीं, जिनकी खेती मुख्य रूप से निर्यात के लिए की जाती थी। इस बदलाव ने पारंपरिक फसल पैटर्न को बाधित कर दिया और भारतीय किसानों का आर्थिक शोषण हुआ। ब्रिटिश भूमि राजस्व प्रणाली लागू करने से, जो भूमि जोत के आधार पर करों का आकलन करती थी, किसानों पर और बोझ बढ़ गया। 1793 के स्थायी बंदोबस्त और भूमि राजस्व संग्रह की रैयतवारी प्रणाली ने भूमि स्वामित्व पैटर्न को बदल दिया और इसके दीर्घकालिक परिणाम हुए।

स्वतंत्रता के बाद कृषि सुधार

1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के साथ, औपनिवेशिक शासन द्वारा छोड़ी गई चुनौतियों का समाधान करने के लिए महत्वपूर्ण कृषि सुधार शुरू किए गए। भूमि सुधारों का उद्देश्य भूमिहीन और हाशिए पर रहने वाले किसानों को भूमि का पुनर्वितरण करना था, जबकि 1960 के दशक में हरित क्रांति ने उच्च उपज वाली फसल किस्मों और आधुनिक कृषि तकनीकों को पेश किया, जिससे कृषि उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति

भारत के विशाल और विविध परिदृश्य में, कृषि देश की रीढ़ बनी हुई है, लाखों लोगों की आजीविका का समर्थन करती है और देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती है। जैसे ही हम भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति का गहराई से अध्ययन करते हैं, हम विभिन्न फसलों, फसल पैटर्न और आधुनिक प्रौद्योगिकी के एकीकरण द्वारा चिह्नित एक गतिशील क्षेत्र पाते हैं।

फसल विविधता

देश की विविध जलवायु परिस्थितियों और भौगोलिक विशेषताओं के कारण, भारतीय कृषि फसलों की अविश्वसनीय विविधता का दावा करती है। प्रमुख फसलों में चावल, गेहूं, मक्का, बाजरा, दालें, तिलहन, गन्ना, कपास और जूट शामिल हैं।

प्रौद्योगिकी और नवाचार

आधुनिक प्रौद्योगिकी और नवाचार ने हाल के दशकों में भारतीय कृषि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। 1960 के दशक की हरित क्रांति ने अधिक उपज देने वाली फसल की किस्में, बेहतर सिंचाई प्रणाली और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग शुरू किया। इन नवाचारों से कृषि उत्पादकता में पर्याप्त वृद्धि हुई और बढ़ती आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा, जैव प्रौद्योगिकी के आगमन ने फसल सुधार में नई संभावनाएं खोल दी हैं।

सूचित निर्णय लेना: ई नाम का सशक्त प्रभाव

ईएनएएम के संदर्भ में, सूचित निर्णय लेना किसानों के कृषि बाजार के साथ जुड़ने के तरीके में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। वास्तविक समय मूल्य की जानकारी और बाजार डेटा तक पहुंच के साथ, किसान अब अपनी कृषि उपज की बिक्री के संबंध में अच्छी तरह से सूचित विकल्प चुनने में सक्षम हैं। यह क्षमता पारंपरिक प्रथाओं से एक महत्वपूर्ण विचलन का प्रतीक है, जहां किसानों को अक्सर स्थानीय बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता था और बाजार की गतिशीलता में दृश्यता का अभाव था।

भारतीय कृषि के सामने चुनौतियाँ

अपनी विविधता और तकनीकी प्रगति के बावजूद, भारतीय कृषि कई चुनौतियों से जूझ रही है जो इसकी स्थिरता और किसानों की भलाई के लिए खतरा हैं

- **जलवायु परिवर्तन:** बदलते मौसम के पैटर्न, अनियमित मानसून और चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि कृषि उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है।
- **बाजार मूल्य में उतार–चढ़ाव:** किसानों को अक्सर मूल्य अस्थिरता का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी आय के बारे में अनिश्चितता पैदा होती है। वे अपने नियंत्रण से परे बाजार शक्तियों के प्रति असुरक्षित हैं।
- **ऋण और बीमा तक पहुंच:** कई छोटे और सीमांत किसानों के पास औपचारिक ऋण और बीमा तक पहुंच नहीं है, जिससे फसल की विफलता या प्राकृतिक आपदाओं के समय वे आर्थिक रूप से कमजोर हो जाते हैं।
- **भूमि विखंडन:** पीढ़ियों से भूमि जोत के उपविभाजन के परिणामस्वरूप खंडित भूखंड हो गए हैं, जिससे मशीनीकरण और आधुनिक कृषि पद्धतियां चुनौतीपूर्ण हो गई हैं।
- **पानी की कमी**: घटते भूजल संसाधनों और अकुशल सिंचाई प्रणालियों के कारण कृषि के लिए पानी की उपलब्धता को लेकर चिंताएँ पैदा हो गई हैं।
- **कीट और बीमारियाँ :** कीटों और बीमारियों का प्रकोप फसलों को तबाह कर सकता है, जिससे किसानों को काफी नुकसान हो सकता है।

सरकारी पहल और नीतियां

भारत सरकार ने इन चुनौतियों से निपटने और किसानों को समर्थन देने के लिए विभिन्न नीतियां और पहल लागू की हैं

- **प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम–किसान):** छोटे और सीमांत किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने वाली एक प्रत्यक्ष आय सहायता योजना।
- **राष्ट्रीय कृषि बाजार:** एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जो कृषि वस्तुओं के इलेक्ट्रॉनिक व्यापार की सुविधा देता है, किसानों के लिए पारदर्शिता और बेहतर कीमतों को बढ़ावा देता है।
- **मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना:** किसानों को उर्वरक और मृदा प्रबंधन के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद करने के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान करना।
- **कृषि सिंचाई योजना:** सिंचाई के बुनियादी ढांचे और जल–उपयोग दक्षता में सुधार पर ध्यान केंद्रित।
- **किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को बढ़ावा देना:** किसानों की सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाने के लिए सामूहिक खेती और विपणन को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्ष

भारतीय कृषि देश की पहचान और प्रगति के केंद्र में है, किसान भूमि के संरक्षक और अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा के रूप में सेवा करते हैं। भारतीय किसानों के सामने बड़ी चुनौतियाँ हैं, जिनमें अप्रत्याशित मौसम पैटर्न से लेकर बाजार मूल्य में उतार–चढ़ाव, ऋण तक सीमित पहुंच और भूमि विखंडन शामिल हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, भारतीय किसान अथक परिश्रम कर खाद्य सुरक्षा और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सरकार ने किसानों को समर्थन देने और इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए विभिन्न पहल और नीतियां लागू की हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम–किसान) प्रत्यक्ष आय सहायता प्रदान करती है, जबकि राष्ट्रीय कृषि बाजार (ईएनएएम) बाजार पहुंच बढ़ाता है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड, प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) के तहत फसल बीमा, और कृषि सिंचाई योजना और परंपरागत कृषि विकास योजना जैसी पहल स्थायी कृषि प्रथाओं और जोखिम शमन को बढ़ावा देती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. पिंगली, पी. (2012)। हरित क्रांतिः प्रभाव, सीमाएँ और आगे का रास्ता। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की कार्यवाही, 109(31), 12302–12308।
2. हेजल, पी.बी. (2009)। एशियाई हरित क्रांति. आईएफपीआरआई चर्चा पत्र, 852।
3. गुलाटी, ए., और सैनी, एस. (2015)। भारत में दोहरे अंक वाली खाद्य मुद्रास्फीतिः बहुत अधिक या बहुत कम नीतिगत कार्रवाई? इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 70(1), 1–19।
4. बिरथल, पी.एस., झा, ए.के., और सिंह, एच. (2017)। कृषि, विविधीकरण और समावेशी विकासः
5. भारतीय अनुभव। खाद्य नीति, 68, 111–123.
6. देव, एस.एम., और चंद, आर. (2019)। भारतीय कृषि का संरचनात्मक परिवर्तन। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 54(10), 31–38.

7. गुलाटी, ए., और सैनी, एस. (2018)। किसानों की आय दोगुनी करना: तर्क, रणनीति, संभावनाएं और कार्य योजना। कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान समीक्षा, 31(2), 153–169।
8. बिरथल, पी.एस., जोशी, पी.के., और गुलाटी, ए. (2005)। उच्च मूल्य वाली खाद्य वस्तुओं में लंबवत समन्वय : छोटे धारकों के लिए निहितार्थ। इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 60(1), 1–13।
9. शंकर, बी., थर्टीले, सी., और विंक, एन. (2010)। आनुवंशिक रूप से संशोधित कपास को अपनाना और भारत में गरीबी में कमी। विश्व विकास, 38(10), 1398–1410।
10. फैन, एस., गुलाटी, ए., और थोराट, एस. (2008)। ग्रामीण भारत में निवेश, सब्सिडी और गरीब–समर्थक विकास। कृषि अर्थशास्त्र, 39(2), 163–170.